रजि० नं० बी ४४४८

जमीन और जनसंख्या

हरिजनसेवक

दो आना

(स्थापक: महात्मा गांधी)

भाग १५ सम्पादक: किशोरलाल मशरूवाला सह-सम्पादक: मगनभाओी देसाओी अंक ३८

मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाओी देसाओी
नवजीवन मुद्रणालय, अहमदाबाद-९

अहमदाबाद, शनिवार, ता० १७ नवम्बर, १९५१

वार्षिक मूल्य देशमें रु० ६
विदेशमें रु० ८; शि० १४

विनोबाका ललितपुरका प्रवचन

ललितपुरका यह प्रार्थना-प्रवचन भावकी गहराओी और सरलतासे परिपूर्ण था। बोलनेमें आवेगका कम्पन था और बोलते-बोलते अेक बार तो विनोबाकी आंखें गीली हो आओीं। अुन्होंने कहा: "मैं आपसे हाथ जोड़कर अनुरोध करता हूं कि आप मेरे अिस यज्ञको सफल बनायें। मैं जमीन मांगता हूं, अपने लिअे नहीं। जिनके लिअे मांगता हूं, वे मूक हैं और अपनी बात मुंह खोलकर नहीं कह सकते। मैं चाहता हूं कि मेरे ये शब्द अमोघ राम-बाणकी तरह सीधे आपके हृदयमें पहुंच जायं।" अुन्होंने बताया कि सम्पूर्ण देशसे मैं पांच करोड़ अेकड़ भूमिका दान प्राप्त करनेका ध्येय रखता हूं। अिसमें से मैं अुत्तरप्रदेशसे अेक करोड़ अेकड़ लेनेकी आशा करता हूं।

"कुछ यहां मिल गया, कुछ वहां मिल गया, अैसे भूदानसे मेरा काम सिद्ध नहीं होगा। मैं तो समाजका रूप ही बदल देना चाहता हूं। रूस तथा दूसरे देशोंमें जिन हिंसक अुपायोंका प्रयोग हुआ है, अुन अुपायोंमें मेरा विश्वास नहीं है। ये अुपाय सभ्य और मानवोचित नहीं हैं। अिन अुपायोंसे हरिजनोंके दुःख न तो दूर होंगे, न कम होंगे, बल्कि बढ़ जायंगे। हिंसाका मार्ग देखनेमें रोगके अिलाजका आभास देता है, लेकिन दरअसल वह दस नअी व्याधियां खड़ी कर देता है। अगर हिंसाको विज्ञानके साथ जोड़ा गया, तो अुसकी परिणति सारी दुनियाके विनाशमें होगी। अिसलिअे यह जरूरी है कि विज्ञानको अहिंसाके ही साथ जोड़ा जाय। अैसा हुआ तो पृथ्वी पर स्वर्गका राज्य अुतर आयगा। यह आज सपना हो सकता है, लेकिन हम आकांक्षा रखें तो सपने भी सिद्ध होते हैं।

"दूसरा अुपाय सरकारी कानूनका हो सकता है। लेकिन कानून तभी योग्य और लाभकारी होगा, जब कि जन, सज्जन और महाजन अुसे पूरा सहकार दें और अुसका पूरा पालन करें। कानूनकी सफलताके लिअे पहले सब लोगोंमें जाग्रतिकी और शिक्षाकी आवश्यकता है; और जिस कामके लिअे कानून बनाया जा रहा है, अुसमें सबके पूर्व-समर्थन और सहयोगकी आवश्यकता है। कानून तो लोगोंकी ही अिच्छाका प्रगट रूप होना चाहिये। नहीं तो लोग चुप नहीं बैठेंगे। वे कानूनमें खामियां ढूंढेंगे और अुसे निकम्मा बना डालेंगे। तो कानून लोगोंके प्रयत्नका फल है। और कोओी भी फल तब तक कैसे मिल सकता है, जब तक हम अुसे बोयें नहीं और अुसके अंकुरको सींचें नहीं? जनतामें जाकर अुस विचारका प्रचार किये बिना कानूनकी अिच्छा करना मनके प्रमादका लक्षण है। अुसमें पुरुषार्थका अभाव है और जो फल प्रयत्नके अन्तमें मिलेगा, अुसे तत्काल हथियानेका लोभ है। अिसलिअे मैंने लोगोंको समझाने-बुझाने और अुनके हृदयमें प्रवेश करनेकी राह अपनाओी है। क्योंकि जनताकी सद्भावनामें मेरा विश्वास है। कुछ लोगोंको अिस यज्ञकी सफलतामें सन्देह होता है। अैसे लोगोंसे मैं ठहरने और प्रतीक्षा करनेके लिअे कहता हूं। अुनके सन्देहके लिअे सचमुच कोओी आधार नहीं है। असफलताकी यह भविष्यवाणी करनेमें वे अुचितसे अधिक आत्मविश्वासका दावा करते हैं। अगर लोगोंको यज्ञका महत्त्व जंच जाय, तो कोओी कारण नहीं कि वे अुस पर चलनेके लिअे क्यों नहीं अुद्यत होंगे। धैर्यपूर्वक लोगोंका मन बदलनेकी बात है। कुछ लोग पूछते हैं: अैसा कहीं और हुआ है? मैं कहूंगा कि विधाताने हमें वही करनेका मौका दिया है, जिसे किसी दूसरेने नहीं किया है। दूसरोंने क्या किया है, यह तो हम देख रहे हैं। दो महायुद्ध हो चुके और तीसरेकी तैयारी हो रही है। लेकिन भारत दूसरोंकी राह नहीं चलना चाहता। वह साहसपूर्वक दुनियाको राह दिखाना चाहता है। अिसलिअे हम आत्मविश्वासके साथ यज्ञकी पूर्तिमें जुट जायं और भगवान्‌के आशीर्वादकी आशा रखें।"

विनोबाने पूछा: "दुनिया नये मार्गकी आशा भारतसे ही तो कर सकती है, किसी दूसरे देशसे वह कैसे कर सकती है?" फिर भारतमें अहिंसाके विकासका अितिहास बताया। भारतीय जीवनके अनेक अुदाहरण देकर अुन्होंने बताया कि हमारे समाजमें कओी अहिंसक क्रांतियां समय-समय पर हुओी हैं। हमारे देशके करोड़ों लोग शाकाहारको अपना धर्म मानते हैं। युद्धका हिंसक काम केवल क्षत्रियोंके लिअे सीमित किया गया। ग्राम-पंचायतें बनीं और वर्ण-व्यवस्थाकी स्थापना हुओी, यानी समाजकी रचना अपने सहज व्यावसायिक कर्तव्योंके आधार पर हुओी। गायको परिवारमें स्थान दिया गया। "लेकिन भूतकालके अितिहासमें अितनी दूर जानेकी जरूरत नहीं है। किसी देशमें क्या कभी अैसा हुआ कि किसीने अहिंसक युद्धमें जनताका नेतृत्व किया हो, और जनताने अुसका पूरा साथ दिया हो? यह घटना दुनियाके अितिहासका सबसे अुज्ज्वल प्रकरण रहनेवाली है।" अिसी प्रसंगमें विनोबाने शान्ति-निकेतन और सेवाग्राममें हुओी विश्व-शांति-परिषद्‌की बैठकोंकी याद दिलाओी। किस तरह दुनियाभरसे शांति चाहनेवाले प्रतिनिधि अिस परिषद्‌में आये और यहांसे आशाका सन्देश लेकर गये। भाषणका अुपसंहार करते हुअे विनोबाने कहा: "निराशा स्वीकार करना ठीक नहीं है। हम जो भी पाना चाहें, पा सकते हैं। हां, अगर हम कुछ पाना ही नहीं चाहते हों तो बात अलग है। भारतमें हमेशा सन्त और महापुरुष जन्म लेते रहे हैं। तो हम अपना मन दुर्बल बनायें, यह हमें शोभा नहीं देता। वह हमारी परम्पराके विरुद्ध होगा। हमें अपनी अिन आध्यात्मिक विभूतियोंसे शक्ति लेना चाहिये और अपने मार्ग पर आगे बढ़ना चाहिये।"

विनोबाने बताया कि हमारे दो मुख्य सवाल हैं। यदि हमने अुनका सही हल निकाला, तो दुनिया मार्गदर्शनके लिअे हमारा मुंह जोहेगी। भारतकी विभिन्न जातियों और सम्प्रदायोंका मेल साधना और अुनका अेक स्वस्थ और सुखी समाज बनाना, यह पहली समस्या है। दूसरी समस्या अपने अहिंसक स्वभावकी प्राप्ति

www.vinoba.in

और रक्षाकी है। हमारा सैनिक बल ज्यादा रहा, तब भी हमने कहीं बाहर आक्रमण नहीं किया। मनुष्य-समाजके प्रति अपने अुत्तर-दायित्वकी अिसी भावनाके कारण बुद्धके कुछ ही शिष्योंने दुनियाके कितने ही हिस्सोंमें बौद्धधर्मके प्रचारमें कामयाबी हासिल की। अीसाअी धर्म यहां व्यापार और शस्त्रबलकी मदद लेकर आया। अीसाअी प्रचारक जहां भी गये, वहां अुन्होंने बात तो 'स्वर्गका राज्य' स्थापित करनेकी कही, लेकिन कायम किया अपने-अपने मुल्कका राज्य।

फिर, विनोबाने हमारे देशके करोड़ों भूखसे पीड़ित गरीबोंकी बात कही। वृक्षको जड़से अुखाड़ दिया जाय, तो वह सूख जाता है, अैसी अुनकी दशा है। और अिस दुर्दशाका कारण यह है कि हमने स्वावलम्बन और ग्रामोद्योगोंकी नींव पर खड़ी हुअी ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थाका नाश कर दिया।

गांवकी बढ़ती हुअी गरीबी बड़ी चिन्ताका विषय है। स्वराज्य आये चार वर्ष हो गये, पर अुनकी दशामें कोअी सुधार नहीं हुआ है। अुसके लिअे किसीको दोष नहीं देना है। जो लोग शासनमें हैं, वे हमारे ही हैं। लेकिन हम अुम्मीद करते हैं कि राष्ट्रकी अर्थ-व्यवस्थाको गढ़नेकी जिम्मेदारी जिन पर है, वे ग्रामोद्योगोंको संजीवित करनेका आग्रह रखेंगे।

जमीनकी समस्याकी चर्चा करते हुअे अुन्होंने कहा: "मैं यह नहीं चाहता कि जमीनके मौजूदा मालिकोंसे अुनकी सारी जमीन अनुचित अुपायोंसे ले ली जाय। लेकिन जो भी हो, युगकी मांग है कि जमींदार बेजमीनोंका अधिकार भी स्वीकार करें, अुन्हें अुनका अुचित हिस्सा देनेके लिअे आगे आयें और जैसे अेक पिता अपने पुत्रोंमें अपनी सम्पत्ति बांटता है, अुसी तरह अपनी जमीन तकसीम कर दें। प्रकृति भगवान्‌के कानूनके अनुसार चलती है। अुससे सीखिये। नदी शेर और गाय, दोनोंको पानी पिलाती है। सूर्य अपना अुजेला भंगीकी कुटियामें भी भेजता है और राजाके महलमें भी। भगवान् मनुष्य-मनुष्यके बीच भेद नहीं कर सकता। भूमि तो सबकी है। आज जिनके पास ज्यादा है, वे अुसके ट्रस्टी हैं, अुनके पास वह धरोहरकी तरह है। हम यह न भूलें कि जमीन तो यहीं रहनेवाली है, पर हमें अेक दिन अुसे छोड़कर बिदा लेनी होगी। तो सब लोग, जिससे जितना बने, अिस यज्ञमें हाथ बंटायें और अुत्साहसे दान करें।"

(अंग्रेजीसे) दा० मूं०

स्त्री-पुरुष-मर्यादा

लेखक : किशोरलाल मशरूवाला

अनु० सोमेश्वर पुरोहित

कीमत १-१२-० डाकखर्च ०-४-०

सरदार वल्लभभाअी

[पहला भाग]

लेखक : नरहरि परीख

अनु० रामनारायण चौधरी

कीमत ६-०-० डाकखर्च १-३-०

रचनात्मक कार्यक्रम

[दूसरा संस्करण]

लेखक : गांधीजी

अनु० काशिनाथ त्रिवेदी

कीमत ०-६-० डाकखर्च ०-२-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा—५

[अुत्तर प्रदेशमें प्रवेश]

बिरधा

ता० ८ अक्तूबरको प्रातःकाल ५ बजे हमने अुत्तर प्रदेशकी सीमामें पांव रखा। करीब ३-४ सौका समुदाय हमारी प्रतीक्षा करता हुआ सड़क पर खड़ा था। प्रांतके हर कोनेसे आये हुअे अनेक रचनात्मक कार्यकर्ता वहां मौजूद थे। जाहिर था कि अिस यज्ञका अर्थ और महत्त्व अुनके ध्यानमें आ गया था और वे नयी आशा और नयी स्फूर्तिका अनुभव कर रहे थे। वातावरणमें रामधुनकी गूंज छा रही थी।

चंद मिनटोंमें हम अमझरा घाटकी पहाड़ीके पास अेक मन्दिरमें जा पहुंचे। अेक जमींदारने ८४ अेकड़ जमीन दी, और अेक दूसरे भाअीने ४६ अेकड़। दानकी घोषणाअें झटपट हुअीं। यह तत्परता हमें भाअी। अैसा लगा कि वे समयकी कीमत जानते हैं और अेक क्षण भी व्यर्थ खोना नहीं चाहते।

प्रातःकालकी मंगल वेलामें अपनी अुत्तर प्रदेशकी यात्राके अिस शुभ आरम्भसे विनोबा प्रसन्न हुअे। दृश्य भी खूब सुन्दर था। गहन वन, मनोरम पहाड़ियां, नीला आकाश, चमकती हुअी तारिकाअें और सबसे बढ़कर छोटे-बड़े होनहार बालक। विनोबा मुग्ध थे। बालक जब बड़े होंगे, तो अुन्हें याद आयेगा कि अुनके बड़े-बूढ़ोंने अेक फकीरके कहने पर अपनी जमीन बेजमीन गरीबोंको बांटनेके लिअे अुसे सौंप दी थी। और तब अुन्हें शायद यह प्रेरणा होगी कि वे मनुष्यके कल्याणके लिअे अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दें।

लोगोंने अुन्हें हजारों अेकड़ जमीन दी है। लेकिन समस्या बड़ी है और अिन हजारों अेकड़ोंसे भी वह सुलझनेवाली नहीं है। विनोबा चाहते हैं कि जमीनके वर्तमान मालिक अपने लाखों बेजमीन भाअियोंके लिअे ५ करोड़ अेकड़ भूमिका अुत्सर्ग करें। अगर अैसा हुआ तो सारी दुनिया भारतके प्रति आशाभरी निगाहसे देखेगी। जिस देशमें बुद्ध और गांधी हुअे, वहां यह चमत्कार असाध्य नहीं होना चाहिये।

छः बजे। अेक मीलके पत्थरके पास विनोबा अपना नाश्ता लेनेके लिअे बैठे। यहां भी करीब सौ आदमी जुड़ गये। हमारे दलके सदस्य अुनके साथ ही नाश्ता करते हैं। साथमें हमेशा कुछ दूसरे लोग भी हो ही जाते हैं, और जो कुछ भी हमारे पास होता है, वह सब हम बांटकर खाते हैं। लेकिन आज तो संख्या बहुत ज्यादा थी। फिर भी हम चाहते थे कि वे हमारे साथ शरीक रहें, पर यह हो कैसे?

कहते हैं, मूसा पहाड़ पर गये और चट्टानको अपनी छड़ीसे छू दिया तो भगवान्‌ने वहां धान्य और जल पैदा कर दिया। तो वह अपनी दया क्या यहां नहीं प्रगट करेगा? द्रौपदीकी अक्षय स्थालीकी भी तो कथा सुनी है। मूसाके साथी अपने विश्राम-वारके लिअे — शनिवारके लिअे — भी, यानी दो दिनके भोजनका संग्रह कर रखना चाहते थे। हमारा कोअी विश्राम-वार नहीं, और संग्रहकी हमें कोअी आवश्यकता भी नहीं होती। नया दिन आता है और नये यजमान लाता है। और अिस नित्य नये आतिथ्यमें अिन अपरिचित-परिचितोंसे जो प्रेम और आदर मिलता है, अुसका वर्णन नहीं हो सकता। अन्तमें, हमारे दलके अेक साथीके घरसे अेक ही दिन पहले फलोंकी जो पार्सल आअी थी, अुसने हमारी मदद की और सब भाअियोंको प्रसादी मिल गअी।

प्रसंगवश विनोबाकी अेक सूचनाका, जिसे वे अकसर दुहराते रहते हैं, अुल्लेख करना जरूरी लगता है। वे कहते हैं: "स्वागत-सत्कारमें खो मत जाना। अुससे सावधान रहना, नहीं तो सत्कार तो मिलेगा ज्यादा और जमीन मिलेगी कम।" अुनका मतलब यह है कि कार्यकर्ताओंको अपना सारा समय यज्ञकी सफलताके लिअे

www.vinoba.in

खर्च करना चाहिये, सत्कार-स्वीकारमें अुसे बेकार नहीं खोना चाहिये।

दीवान हनुमन्तसिंह अमझरा घाटमें ८४ अेकड़ दे चुके थे। वे यहां फिर आये, और विनोबासे बोले कि अुन्हें दो शब्द कहनेकी अिजाजत दी जाय। विनोबाने अुनकी बात अेकदम मान ली। दीवानजी खड़े हुअे और बोले: "आप अनुमति दें, मैं २०० अेकड़ जमीन और देना चाहता हूं।" वे और कुछ नहीं कह सके। अुनका हृदय भर आया था। विनोबाके प्रातःप्रवचनने अुन्हें बहुत प्रभावित कर दिया था।

मध्यप्रदेशके कुछ मित्र हमारे साथ यहां तक चले आये थे। अेक मित्रको लगा कि विनोबाको खाली हाथ विदा देना ठीक नहीं। वे अुठे और मानो अपने प्रांतकी अन्तिम अंजलिकी तरह अुन्होंने दो अेकड़का दान और दिया।

अमझरासे बिरधा तक (करीब १२ मील तक), जो कि यहां हमारा पहला मुकाम था, लगातार भूदान और रामधुनका यह सिलसिला जारी रहा। हमारे सजग और अुद्योगी कार्यकर्ताओंने शायद गांवके लोगोंको विनोबा और अुनके अुद्देश्यकी अच्छी जानकारी करा दी थी। तभी तो हमें नारहट, गोना और पटौआमें हर जगह भूदान मिलता ही गया। अिसके सिवा, बूढ़ोंसे लेकर बच्चों तक, जो दो-दो, तीन-तीनकी टुकड़ियोंमें आ रहे थे, सबके सब अपनी-अपनी जगह रामधुन गा रहे थे। वे विनोबाको विनयपूर्वक अपना मूक प्रणाम निवेदित करते थे और अपने दारिद्र्य-विनाशन दाताके प्रति अुनके चेहरोंसे कृतज्ञता टपकती थी। सारा दृश्य अत्यन्त प्रेरक और प्राणप्रद था।

अपने प्रार्थना-प्रवचनमें विनोबाने कहा: "क्या भगवान् कभी हवा और पानीका अधिकार कुछ अिने-गिने लोगोंको दे सकते हैं? तब फिर वे जमीनका ही अधिकार कुछ थोड़ेसे लोगोंके हाथमें क्यों रहने देंगे?"

विनोबाने भगवान्की विकेन्द्रित शासन-प्रणाली समझाते हुअे कहा: "भगवान्की व्यवस्था देखिये। अुसने हमें जन्म दिया है, और आजादीसे सांस लेनेके लिअे नाक दी है। शिशुके लिअे अुसने दूधका प्रबन्ध किया है। तो यह कैसे हो सकता है कि वह जमीन कुछ थोड़ेसे लोगोंके ही हाथमें रहने दे?"

विनोबाने स्पष्ट किया कि भूदान-यज्ञका अर्थ जमीनका समान बंटवारा नहीं है। यह तो अेक प्रतीक है। लेकिन यदि अिस विचारकी सही अुपलब्धि लोगोंको अेक बार हो गअी, तो मेरा विश्वास है कि वह पनपेगा और पल्लवित होगा। फिर अुसका नाश नहीं होगा। जमीन जिनके पास है, वे खुद बेजमीन लोगोंकी शोध करेंगे, जिस तरह कोअी पिता अपनी कन्याके लिअे वरकी तलाश करता है। अिस विचारके प्रचारकी अुन्हें कोअी जल्दी नहीं है। वह अपने समयका निर्णय खुद करेगा और फैलेगा।

अगर अुनकी कोशिशके बावजूद खूनी क्रांति अनिवार्य है, जैसा कि कम्युनिस्ट लोग चाहते हैं और समाजवादी भी जिसका सम्पूर्ण वर्जन करनेके लिअे तैयार नहीं हैं, तो अुन्हें अुसका भी कोअी डर नहीं है। नरसिंह भगवान्का अवतार जब हुआ तो नारद जैसे भक्त भी स्तब्ध हो गये और अुनका वीणावादन, जो कभी बन्द नहीं हुआ था, अेक क्षण रुक गया। लेकिन प्रह्लाद अुस समय भी निर्भय रहा। अुसने कहा: 'नाहं बिभेमि'। विनोबाने कहा: "मैं भी अैसा ही करूंगा और कहूंगा — जागतिक युद्ध यदि आता है तो आये। मैं अुससे डरता नहीं। अुससे अहिंसाका रास्ता और प्रशस्त होनेवाला है। और अहिंसाका प्रचार करते-करते अगर मुझे जाना पड़ा, तो मैं यह विश्वास लेकर जाअूंगा कि मेरा विचार हजार-हजार रूपोंमें अंकुरित होनेवाला है।"

ललितपुर

अगले दिन ता० ९ को हम लोग ललितपुर आ पहुंचे। कार्यकर्ताओंसे अपने कामकी बात करते हुअे विनोबाने अपना हृदय अुंड़ेल दिया। कहा: "किसी तरहका प्रचारकाम करनेकी मेरी बिलकुल अिच्छा नहीं थी। लेकिन बापूके निर्वाणके बाद मैंने अपनी जिम्मेदारी पहचानी और यह काम अुठा लिया। अनुभवने मुझे सिखाया कि अहिंसक क्रांति करना है, तो गांव-गांव पैदलयात्रा ही अुसका अुपाय है।" अुन्होंने भारतमें अहिंसाके विकास-क्रमका अितिहास बताया। बातचीतके अिस अंशको अुन्होंने अुस दिन प्रार्थना-प्रवचनमें भी दुहराया। अुन्होंने कहा: "हमारा देश बिलकुल निःशस्त्र था, अिसलिअे गांधीजी हमारे देशकी अेक अैतिहासिक आवश्यकता हो गये थे। अिसलिअे गांधीके साथ अहिंसाका अस्त्र आया। लोगोंने यथासंभव अिस अस्त्रको तो अपनाया, लेकिन अुसकी जड़में जो विश्वास है, वह वे ग्रहण नहीं कर सके। गांधीजीके निकट साथियोंने भी अुन्हें छोड़ दिया। और अेक पागल युवकने अुनके भौतिक शरीरका ही नाश कर दिया।"

आगे चलकर विनोबाने बताया कि हमारे देशमें किस तरह अहिंसाका विकास हुआ। अुन्होंने कहा: "आप अिस चीजको मेरी आंखोंसे देखिये। मेरा अनुभव कहता है कि अहिंसाकी यह शक्ति हमारा यह कथित शिक्षित वर्ग नहीं प्रगट कर सकता। क्या वे लोग राम, कृष्ण, बुद्ध, अीसा, शिवाजी — किसीके भी मार्ग पर चलते हैं? लेकिन हमारी साधारण जनता अहिंसाका सन्देश सुनती है और अुस पर चलती है। अिस अस्त्रका प्रयोग अुसीने किया है।"

अिसके बाद अुन्होंने परंधाममें शुरू किये गये अपने नये कांचन-मुक्तिके प्रयोगका जिक्र करते हुअे कहा: "मैं धनी और गरीब दोनोंका मित्र हूं, दोनोंका कल्याण चाहता हूं। मेरे लिअे तो सभी भगवान्के रूप हैं। अगर धनी आज मुझे जमीन नहीं देंगे, तो मुझे निराशा नहीं होनेवाली है। आज नहीं देंगे, तो मेरा विश्वास है कि कल देंगे। मैं तो सिर्फ अपना विचार अुन तक पहुंचा देना चाहता हूं।"

अुन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि अुनका कोअी दल नहीं है। प्रेम और सेवा, यही अुनका दल है। जनता ही अुनकी मालिक है, और वे अुसके सेवक हैं। लोग किसी भी दलमें रहें, अुनका मार्ग तो प्रेमका है। और जनताको यह समझना चाहिये कि प्रेम-सूर्यका अुदय होने पर और जितने मार्ग हैं, वे सब तारिकाओंकी तरह फीके पड़ जाते हैं और विलुप्त हो जाते हैं।

सामूहिक कताअीमें करीब सौकी अुपस्थिति थी। अुसी शामको प्रसिद्ध जैन संत श्री गणेशजी वर्णी विनोबासे मिलने आये। विनोबाने अुनकी आत्मकथा पढ़ी थी और वर्णीजीके प्रति अुनके मनमें काफी आदर था। श्री वर्णीजीने भूदान-यज्ञमें पूरी सहायता देनेका वचन दिया।

शामका प्रवचन, जो बहुत गंभीर और महत्त्वपूर्ण था, अलग दिया जा रहा है।

खितवांस और महरौनी

ललितपुरसे टीकमगढ़ जाते हुअे रास्तेमें अुत्तर प्रदेशके दो गांवों — खितवांस और महरौनी — में मुकाम हुआ। खितवांसके निवासियोंने दो दिनसे अपने गांवकी सफाअी कर रखी थी। गांववालोंका अुत्साह अवर्णनीय था। अुन्होंने २२१ अेकड़ जमीन दी। महरौनीमें करीब ७०० अेकड़ जमीन मिली। अुत्तर प्रदेशके अिन तीन दिनोंके ही अनुभवने यह प्रगट कर दिया कि लोग चेत गये हैं और अुन्होंने अिस क्रांतिबीजधारी कामका महत्त्व और तात्पर्य अच्छी तरह समझ लिया है।

(अंग्रेजीसे)

वा० मूं०

www.vinoba.in

हरिजनसेवक

१७ नवम्बर १९५१

जमीन और जनसंख्या

खेतीकी समस्या हमारी अेक अत्यन्त मुश्किल समस्या है। योजना समितिने अुस पर विस्तारपूर्वक विचार किया है और अुसके सम्बन्धमें वह कुछ निर्णयों पर भी आअी है। अिन निर्णयोंसे कोअी सहमत हो या न हो, लेकिन हर कोअी यह स्वीकार करेगा कि समितिने अिस समस्याको निष्पक्ष और वस्तुंनिष्ठ दृष्टिसे देखनेकी कोशिश की है। हमारे देशके लिअे खेतीका महत्त्व कितना ज्यादा है, अिस बात पर निगाह रखकर समितिने अैसी व्यवस्था या व्यवस्थाओंको ढूंढ़नेकी कोशिश की है, जिनके सहारे हमारी जमीनकी अुपज ज्यादासे ज्यादा बढ़ाअी जा सके। अुसके मनमें किसी खास व्यवस्था या वादका आग्रह या द्वेष नहीं रहा है। लेकिन समितिको अेक अैसी जटिल परिस्थितिमें से अपनी राह निकालनी पड़ी है, जिसका निर्माण बीते हुअे अितिहासने किया है। अैसी हालतमें, अिस परिस्थितिके हरअेक अंगके महत्त्वका ठीक मूल्य आंकना आसान नहीं है। अिसलिअे यदि अिस समस्याके अध्येता भिन्न-भिन्न निर्णयों पर पहुंचें, तो अिसमें कोअी आश्चर्यकी बात नहीं है। मतभेद अिसलिअे भी अनिवार्य हो जाता है कि खेतीकी सही प्रणालीके शुद्ध वैज्ञानिक पहलू पर भी खेतीके निष्णात अेक दूसरेसे बिलकुल विपरीत रायें रखते हैं। फलतः साधारण अर्थशास्त्री, जिनका अध्ययन सीमित और अनुभव और भी अधिक सीमित होता है, बड़ी गड़बड़में पड़ जाते हैं। अुनमें से कुछ वैज्ञानिकोंके अिस दलसे प्रभावित होते हैं, दूसरे दूसरे दलके वैज्ञानिकोंसे।

अिस विषयको कअी भागोंमें बांटा जा सकता है और हरअेक भाग पर विस्तारपूर्वक विचार हो सकता है। मेरा यह दावा नहीं है कि मैंने अिस विषयके किसी भी भागका गहरा अध्ययन कर लिया है। अिसलिअे अिस विषयकी मेरी आलोचना अेक आग्रहमुक्त खुले मनवाले शोधककी ही मानी जाय, विरुद्ध पक्षके किसी आग्रही मतवादीकी नहीं। अगर मैं अैसी बहुत-सी बातोंको माननेके लिअे तैयार नहीं हूं, जिनको सामान्यतः स्वीकृत कर लिया गया है, तो वह भी मैं खुले दिमागसे करता हूं और लोगोंका ध्यान अिस बात पर आकर्षित करनेके लिअे करता हूं कि अिन बहुधा प्रचलित धारणाओंके सहीपनके लिअे पर्याप्त प्रमाण नहीं है।

प्रस्तुत लेखमें मैं अैसी दो धारणाओं पर अेक साथ विचार करना चाहता हूं: पहली यह कि भारतमें खेती योग्य जमीन अितनी नहीं है कि हरअेक व्यक्तिको दी जा सके। और दूसरी यह कि जब तक खेतीकी अिकाअीका परिमाण काफी बढ़ा नहीं दिया जाता, तब तक हमारी जनसंख्याके लिअे आवश्यक पर्याप्त अन्न पैदा नहीं किया जा सकता।

गणितज्ञ हमसे कहते हैं कि हमारे यहां खेती योग्य पूरी जमीनको समग्र जनसंख्यामें बांट दिया जाय, तो फी व्यक्ति अेक अेकड़से भी कम जमीन मिलेगी। अितनी कम जमीनमें खेतीकी प्रणाली सुधारनेकी गुंजाअिश नहीं। अिसलिअे जमीनकी अिच्छा रखनेवाले हरअेक मनुष्यको जमीन देना व्यर्थ है। अिसके सिवा, कालांतरमें ये छोटे-छोटे खेत भी अुस व्यक्तिके अुत्तराधिकारियोंमें बंट जायेंगे, और तब अैसा समय भी आयेगा जब अेक आदमीके पास अुतनी जमीन भी न होगी, जितनी अुसकी चिता चुननेके लिअे चाहिये। अिस तरह छोटे-छोटे खेतोंकी व्यवस्था न तो व्यावहारिक है और न आर्थिक दृष्टिसे संभव ही।

अिन युक्तियोंमें कोअी तथ्य न हो, अैसी बात नहीं। लेकिन मैं विनयपूर्वक कहना चाहता हूं कि अुनका महत्त्व जितना है, अुससे कहीं ज्यादा माना जाता है। जमीन और जनसंख्याका अनुपात वास्तविक व्यवहारमें अुतना कम नहीं है, जितना वह कागजी गणितमें दीखता है। जमीनकी मांग व्यक्ति नहीं करते, परिवार करते हैं; और अैसे परिवार भी कम नहीं हैं, जो किसानी नहीं करना चाहते; बल्कि दूसरे धंधे करना पसन्द करेंगे, बशर्ते ये धंधे अुन्हें मिलें।

दूसरे, जमीन पर लोकसंख्याके बोझका कारण सिर्फ बढ़ी हुअी लोकसंख्या नहीं है। यह तो शायद अिस परिस्थितिका आखिरी कारण है। ज्यादा महत्त्वके कारण ये हैं: (१) गांवोंके अुद्योगोंको मारकर और अुन्हें दूसरा कोअी धंधा न देकर देहाती जनताको पद्धतिपूर्वक तबाह किया गया है और अिस तरह अुन्हें अपनी जीवनयात्राके अेकमात्र अुपायकी तरह खेतीकी मजदूरीका आश्रय लेनेके लिअे लाचार किया गया है। (२) लगान या तो, जैसा अंग्रेजी व्यवस्थामें होता रहा, नकद रुपयोंमें वसूल हुआ है या पैदा हुअे अनाजके निश्चित हिस्सेकी तरह लिया गया है। यह हिस्सा अुपजके अनुसार साल-दर-साल बदलता रहता है। दोनों तरीके किसानोंके हितोंके प्रतिकूल रहे हैं और अुनके प्रयोगने किसानोंको अुत्तरोत्तर साधनहीन बनाया है। अुनके कारण किसान हमेशा कर्जदार रहे हैं, तथा अपनी जोती हुअी जमीनको न तो सुधार पाये हैं और न अुसका पूरा लाभ ही अुठा पाये हैं। अिस व्यवस्थाके कारण ही जो लोग किसान नहीं हैं, वे आसानीसे जमीनके मालिक बन गये हैं। (३) सघन (intensive) खेतीकी अुपेक्षा हुअी है, क्योंकि किसानके पास अिसके लिअे पर्याप्त साधन नहीं थे और सरकारने अुनके लिअे अैसे साधन सुलभ बनानेकी कोअी कोशिश नहीं की। नतीजा यह हुआ है कि हमारे पास आज यह जाननेका जरिया ही नहीं है कि हमारी जमीनोंकी अुपज-शक्ति क्या है। अिसलिअे यह निष्कर्ष कि जब तक हम किसी तरह बड़े पैमानेकी खेती शुरू नहीं करते, तब तक खेतीकी अुपज बढ़ानेकी विशेष आशा नहीं की जा सकती, बेबुनियाद मालूम होता है। (४) विदेशी माल और निरर्थक आमोद-प्रमोदकी वस्तुअें भेजकर तथा होटल, सिनेमा और शराबखानों द्वारा खर्चीली फैशनों, असंस्कृत रुचियों और खराब आदतोंका प्रचार करके देहातियोंका योजनाबद्ध शोषण किया गया है। और (५) जबरदस्ती लादी हुअी बेकारी।

अिन परिस्थितियोंका अेक विशेष परिणाम यह हुआ है कि देहाती जनतामें सन्तानकी प्रेरणा बढ़ी है। संभवतः वंशरक्षाकी वासनाकी यह प्रकृतिकी ही प्रतिक्रिया है। क्योंकि यह न हो तो जनता अिन परिस्थितियोंमें जल्दी ही खत्म हो जाय। जनसंख्याके बोझकी बात झूठ चाहे न हो, लेकिन अुसका अेक भयानक चित्र खींचनेकी आवश्यकता नहीं है, और अुसका प्रचार भी अिस तरह नहीं किया जाना चाहिये। हमारी बढ़ती हुअी जनसंख्याके दुनियाके दूसरे हिस्सोंमें फैल जानेकी आवश्यकतासे अिनकार नहीं है। लेकिन सही परिस्थितियोंका निर्माण किया जाय, जमीनका अुचित बंटवारा हो और सघन खेती पर पूरा ध्यान दिया जाय, तो सुविधापूर्वक रहनेके लिअे जितना जरूरी है अुतना हम बेशक पैदा कर सकते हैं, और करना चाहिये।

अगर बेजमीन खेतिहरको यह अनुभव करनेका मौका दिया जाय कि जमीनका मालिक वही है, तो अुसे काममें तन-मनसे जुटनेमें आनन्द और प्रेरणा मिलेगी। तब अुसे यह विचार भी आयेगा कि स्वतंत्र खेतीके लिअे अुसकी जमीन बहुत छोटी पड़ती है, और

www.vinoba.in

वह अपने पड़ोसियोंसे मिलकर खेती करनेकी बात भी सोचेगा। यह तो आम अनुभवकी चीज है कि हमारी ग्राम-पंचायतों और सहकारी समितियोंकी वैसी प्रगति नहीं हो रही है, जैसी होनी चाहिये। कारण, अधिकांश जनताके पास न तो जमीन है, न कोअी कारीगरी है और न कोअी दूसरा स्थायी धन्धा है; यानी अैसा लगभग कुछ नहीं है, जिससे अुन्हें अिन संस्थाओंका आकर्षण हो। जिन थोड़ेसे लोगोंके पास जमीन है, अुनकी जमीनें भी प्रमाणमें अितनी असमान हैं कि ये सहकारी समितियां कहने भरकी हैं, व्यवहारकी दृष्टिसे तो वे छोटी-छोटी लिमिटेड कम्पनियां ही बन गअी हैं। जमीनका अुचित और विस्तृत बंटवारा किया जाय, तो अिन संस्थाओंमें जान आ जायगी और वे अेक आन्दोलन बन जायंगी। जमीनकी मालिकीके टुकड़े करना और जमीनके टुकड़े करना, दोनों अेक चीज नहीं है; और जमीनके छोटे-छोटे टुकड़े किये बिना ही पहली चीज की जा सकती है। जरूरत हो तो पूरे गांवकी जमीनका अेक बड़ा खेत बनाया जा सकता है, जिस पर पांच सौ किसानोंका अधिकार हो।

अुत्तराधिकारके कारण जमीनका जो विभाजन होता है, अुसे रोकनेके लिअे अुत्तराधिकारके कानूनमें अनुकूल परिवर्तन किया जा सकता है। जमींदारों द्वारा दूसरोंको जमीन देकर खेती करवाने (absentee landlordism) की बुराअी रोकनेके लिअे जमीन दूसरोंको देनेके अधिकार पर आवश्यक प्रतिबन्ध लगाये जा सकते हैं, और लगाये जाने चाहियें। अिसी तरह अगर जमींदार खुद किसान नहीं रह गया है, तो अुसके लिअे यह अनिवार्य कर दिया जाय कि वह अपनी जमीन जो व्यक्ति प्रत्यक्ष खेती कर रहा है, अुसे दे दे।

सन्तान-वृद्धिको रोकनेकी जरूरतसे अिनकार नहीं है। लेकिन वह जरूरत अिस डरसे नहीं कि अन्न पैदा करनेके लिअे हमारी जमीन नाकाफी है, बल्कि दूसरे नैतिक और भौतिक कारणोंसे है। बच्चे ज्यादा हों और जल्दी-जल्दी हों, तो माताका स्वास्थ्य गिरता है और अुसकी स्वतंत्रता छिनती है। बच्चोंका ठीक पालन-पोषण, अुनकी तालीम और हरअेककी संभाल कठिन हो जाती है, यहां तक कि असंभव हो जाती है। रोग और बीमारी रोकना कठिन हो जाता है। अुस हालतमें शिशुओंकी मृत्यु, जैसा कि खासकर गरीब लोग अुसे मानते हैं, जीवनकी अेक अनिवार्य घटना बन जाती है। अिसलिअे अपने देशकी जनसंख्या बढ़ानेकी अिच्छा हो, तो भी सन्तानका जल्दी-जल्दी होना वांछनीय नहीं है।

लेकिन सन्तानकी वृद्धि रोकनेके लिअे किन अुपायोंका अवलम्बन होता है, यह बात भी महत्त्वकी और विचारणीय है। साधन-शुद्धिका सिद्धांत मनुष्य-जीवनके अन्य अुद्देश्योंके लिअे जितना अुपयुक्त है, अुतना ही यहां भी है। अिस क्षेत्रमें तो अुसका आचरण और भी सावधानीके साथ होना चाहिये। क्योंकि प्रजोत्पत्तिका कार्य नैतिक और आध्यात्मिक ज्यादा है, अुसका शारीरिक पहलू गौण है। नीतिका समर्थन जिन्हें नहीं हो सकता, अैसे अुपायोंसे यदि जनसंख्याकी रोक या वृद्धि की गअी, तो प्रकृति अिसका बदला लिये बिना नहीं रहेगी। विज्ञानकी हरअेक प्रगतिके बावजूद अनुचित अुपायोंके अवलम्बनसे नये-नये रोग, मानसिक विकृतियां, नीति-भ्रष्टता, युद्ध और निरन्तर अशांति बढ़ेगी।

वर्धा, ६-११-'५१ कि० घ० मशरूवाला

(अंग्रेजीसे)

गांधी और साम्यवाद

[श्री विनोबाकी भूमिका सहित]

लेखक: **किशोरलाल मशरूवाला**

कीमत १-४-० डाकखर्च ०-४-०

नवजीवन प्रकाशन मंदिर, अहमदाबाद-९

अुड़ीसामें शराबबन्दी

अुड़ीसा सरकारने अुड़ीसाकी धारासभा द्वारा पास किये गये प्रस्तावको स्वीकार करके शराबबन्दीकी शुरुआत की थी। अुस समयके मुख्य मंत्री श्री हरेकृष्ण महेताबने शराबबन्दीको सफल बनानेके रास्तों और साधनोंका पता लगानेके लिअे अेक शराबबन्दी-कमेटी नियुक्त की थी। कमेटीने स्मृतिपत्रके रूपमें अपने प्रस्ताव रखे थे। लेकिन अुड़ीसा सरकार अुनके साथ खिलवाड़ करती रही है। सारे डरकी जड़ अिस बातमें है कि अिससे आयमें घाटा होगा। साथ ही, जबसे जवाहरलाल नेहरू और भारत सरकारने यह अिशारा किया कि राज्य-सरकारोंको शराबबन्दीकी नीति पर धीरे-धीरे अमल करना चाहिये, तबसे सरकारकी नीति भीतरसे बदल गअी है। अिसके फलस्वरूप अुड़ीसा सरकार अिस विषयमें अुदासीन-सी हो गअी है। अिसके अलावा, केन्द्रीय सरकार जो भारी मशीनें बाहरसे मंगाती है, अुनके साथ वह १५ प्रतिशत मौज-शौककी चीजें लेनेके लिअे बंधी हुअी है। नतीजा यह हुआ है कि नअी-नअी किस्मकी शराबें हमारे देशमें आअी हैं और शराब पीनेकी आदत बढ़ी है, घटी नहीं। अगर कोअी बड़ा जिम्मेदार आदमी कहे कि "कोअी आदमी कभी-कभी अेक-दो घूंट शराब पी ले, तो कोअी हर्ज नहीं", तो शराबबन्दी कैसे सफल हो सकती है? हमारी आंखोंके सामने अुड़ीसा सरकारके बहुतसे बड़े कर्मचारी और दूसरे अूंचे वर्गके लोग कटक क्लबमें शराब पीते हैं। शराब पीना फैशनकी चीज बन गअी है और अुसके विषयमें नैतिक लज्जा या कलंक या भयका भाव कम हो गया है। अुड़ीसा सरकार अपनी बिना सोची-समझी शराबबन्दीकी योजनाके कारण चोरीसे शराब लाने ले जानेके कअी छिपे रास्ते पैदा कर देगी। शीघ्र गतिसे होनेवाले औद्योगीकरणके साथ नैतिकताका स्तर भी गिरता जा रहा है। कटक होटल, जहां शराब पिलानेकी व्यवस्था थी लेकिन जो अुड़ीसा धारासभाके कुछ सदस्योंकी टीकाके कारण बन्द कर दी गअी थी, अब शराबका लाअिसेन्स पानेके लिअे शोरगुल मचा रहा है। अुसकी दलील यह है कि अगर कटक अेम्पोरियम और बिलिमोरियाको लाअिसेन्स मिलता है, तो अुसे क्यों नहीं मिलना चाहिये? रेलवेमें शराबबन्दी है और फिर भी कटक, सम्बलपुर वगैरा शहरोंमें बहुतायतसे शराब मिलती है। अकेले कटक शहरमें शराब, अफीम वगैरा नशीली चीजोंकी हर साल १२ लाख रुपयेकी खपत होती है। अैसी हालतोंमें शराबबन्दीका अमल कैसे हो सकता है? कुछ लोग कहते हैं कि शराबबन्दीसे अुनकी नागरिक स्वतंत्रता कम हो जाती है। कुछ लोग शराब पीनेका बचाव करेंगे, जैसे कि कुछ लोग व्यभिचारका बचाव करते हैं। ये लोग कस्बों और शहरोंमें वेश्यालयोंका अिस आधार पर बचाव करते हैं कि अिससे पारिवारिक जीवनकी पवित्रता सुरक्षित रहेगी। कैसी विचित्र दलील है!

शराबबन्दी कैसे सफल होगी?

सबसे पहले कस्बे और शहरोंमें संपूर्ण शराबबन्दी करनी चाहिये। हो सकता है कुछ लोग चोरीसे शराब लायेंगे। लेकिन अुससे अुतना नुकसान नहीं होगा, जितना कि खुले आम शराब बिकनेसे होता है। फिर, नागरिकोंको अिस बातकी शिक्षा देनी होगी कि शराब जहर है। अिस विषयकी पाठ्य-पुस्तकें लिखी जानी चाहियें। मेजिक लेन्टर्न स्लाअिडों, सिनेमा और भाषणोंके जरिये अिसका प्रचार होना चाहिये। शराबकी भट्टियां बन्द कर दी जानी चाहियें। मौजूदा भट्टियोंसे कहा जाय कि वे व्यापारिक और वैज्ञानिक प्रयोजनोंके लिअे मेथिलेटेड स्पिरिट और शुद्ध अल्कोहोल (मद्यसार) तैयार करें। जनतामें शराबके खिलाफ भावना पैदा करनी चाहिये। यह कहनेमें कोअी अर्थ नहीं है कि "मैं शराब पीकर भी वैसे ही मोटर चला सकता हूं, जैसे बिना पीये।" शराब अुत्तेजित बनाती है और फिर व्यभिचार शुरू होता है। हमारे सामने यह आदर्श

www.vinoba.in

होना चाहिये — व्यक्तिके लिअे संपूर्ण संयम और राष्ट्रके लिअे संपूर्ण शराबबन्दी। मंत्रियोंको अिस पर ध्यान देना चाहिये। यह बड़े दुःखकी बात है कि अुड़ीसाके लोग लगभग दो करोड़ रुपये शराब पर खर्च कर देते हैं और सरकार अिस मामलेमें लोगोंकी कमजोरीसे फायदा अुठाती है। सरकार अुनके रास्तेमें लालचोंका जाल बिछाती है। यह वास्तवमें अमानुषिक है।

शराब — चुनावका मुद्दा

अिस शराबके व्यापारको चुनावका अेक मुद्दा बनाया जाय। हम देखें कि कौन शराब पीनेका प्रचार करते हैं और वोट पाते हैं। अिस तरह अेक भी पियक्कड़ नहीं चुना जायगा। हम हमेशा अिस बातका पता लगाते रहें कि कौन पियक्कड़ हैं, कौन कभी-कभी शराब पीते हैं, कौन अुसके आदी हैं और कौन अुसकी बढ़ीचढ़ी तारीफ करते हैं। वे लोग चौराहे पर आयें और अुसका प्रचार करें। हम देखें कि किसमें अितनी हिम्मत है। शराबकी समस्या अेक राष्ट्रीय समस्या है। "शराबकी बोतल अपनी काली परछाअीं झोंपड़ी और महल दोनों पर फैलाती है। वह सुन्दरता पर लज्जाका आवरण चढ़ाती है, पुरुषत्वके सच्चे तेजको छिपा देती है, और भोलेभाले बालकके चेहरेसे हंसीको गायब कर देती है। वह दूसरी हर बुराअीको बढ़ाती है और अुसमें मनुष्यको प्रवृत्त करती है। शराबकी शक्ति पर विजय पानेसे मनुष्य-जाति स्वतंत्र बनेगी और दूसरी बुराअियोंको मिटानेमें ज्यादा समर्थ होगी।" (आर्थर लॉकवुड) हमारे सारे दुःखोंकी जड़ शराब पीनेमें है। अुद्योग बढ़ते हैं, लोगोंको ज्यादा पैसा मिलता है; अिसलिअे वे शराब पीते हैं और व्यभिचार करते हैं। अिन्सान नीचे गिरता है और शैतान अुसके भीतर सिर अुठाता है। सारे औद्योगिक क्षेत्रोंको शराबसे मुक्त कर दिया जाय। शराब भ्रष्ट राजनीतिक व्यवहारकी संगिनी है। शराबकी खपत पर लगाया जानेवाला कंट्रोल कहां है? कंट्रोलके नाम पर सरकार ज्यादा-ज्यादा आमदनी करती रही है, लेकिन शराबकी खपत घटानेके लिअे वह कुछ नहीं कर रही है। सरकार न सिर्फ शराबके प्रति अुदासीन नहीं है, बल्कि वह निश्चित रूपसे अुसकी खपतके पक्षमें है। चोरीसे शराब गालनेकी क्रियाको बन्द करनेके नाम पर वह ज्यादा भट्टियां खोल रही है। सरकार सुंधी (शराब बेचनेवाली) बन रही है; दिनोंदिन ज्यादा शक्तिशाली और समृद्ध सुंधी बन रही है।

भारतीय विधानका यह आदेश है कि "राज्य नशीले पेयों और स्वास्थ्यको नुकसान पहुंचानेवाले मादक पदार्थोंकी खपतको बन्द करनेकी कोशिश करेगा; यह प्रतिबन्ध दवाके तौर पर अिन चीजोंके अुपयोग पर लागू नहीं होगा।" शराब पीनेकी आदत अेक राष्ट्रीय बीमारी है।

शराब बेचकर "राज्य गरीबोंको अपना पैसा बरबाद करनेकी सुविधा प्रदान करता है।" श्री राजगोपालाचार्यने कहा है: "शराबबन्दीसे अिस देश पर कभी भी भयंकर संकट नहीं आ पड़ेगा।" महात्मा गांधीने 'यंग अिंडिया' (ता० २३-२-१९२२) में कहा है: "आप अिस भ्रमपूर्ण दलीलसे धोखा नहीं खायें कि हिन्दुस्तानमें जबरन् शराबबन्दी नहीं की जानी चाहिये और जो शराब पीना चाहें, अुनके लिअे यह सुविधा कर दी जानी चाहिये। राज्यको अपनी प्रजाके दुर्गुणोंका पोषण नहीं करना चाहिये। हम अनीतिके धामोंको कानूनी ठहराकर लाअिसेन्स नहीं देते। चोर चोरी करनेकी अपनी वृत्तिको सन्तुष्ट कर सकें, अिसलिअे हम अुन्हें चोरी करनेकी सुविधा नहीं देते। शराबकी आदतको मैं चोरीसे और शायद वेश्यागमनसे भी ज्यादा निन्दनीय मानता हूं। क्या वह अकसर अिन दोनोंकी जननी नहीं है?"

हम शराबबन्दीका मिशन लेकर काम करें, सक्रिय संयमी बनें।

शराबबन्दीके विषयमें शिक्षाके पहले कानून बनना चाहिये या कमसे कम कानूनको शिक्षाप्रचारके साथ-साथ चलना चाहिये।

शराब पीकर आदमी वेश्यालयकी ही शरण लेता है।

फ्रांसमें अतिशय शराब पीनेसे ही पुरुषोंमें पागलोंकी संख्या ३४ प्रतिशत तक पहुंच गअी है। ग्रेट ब्रिटेनके पागलखानोंमें प्रति दसमें से छः पागल शराबके कारण होते हैं।

यह बड़े दुःखकी बात है कि हत्यारेको सजा दी जाती है और शराबीको छोड़ दिया जाता है।

महाभारतके अनुशासन पर्वके १५वें अध्यायमें भीष्मने युधिष्ठिरको सुरापानसे बचनेका अुपदेश दिया है और कहा है कि सुरासे बचनेसे अुतना ही लाभ होता है, जितना प्रतिमास अश्वमेध याग करनेसे। छान्दोग्य अुपनिषद्के १०वें अध्यायमें सुरापानको पांचवां महापाप माना गया है — अुसे अुतना ही निन्दनीय समझा गया है, जितना कि शिष्यका गुरुपत्नीके साथ व्यभिचार करना।

चुनाव सम्बन्धी प्रचारमें शराबको कोअी स्थान नहीं दिया जाना चाहिये, वर्ना लोगोंके सिर फूटेंगे। चुनाव भी प्रामाणिक नहीं होंगे। पहले हरिजनों और दूसरोंको शराब पिलाकर वोट प्राप्त किये गये हैं। अिस बार आदिवासियों, हरिजनों और पियक्कड़ोंके वोट पानेके लिअे यह चाल नहीं चली जानी चाहिये।

शराबबन्दी अेक विधायक कार्यक्रम है, न कि सिर्फ सुधारकी नकारात्मक नीति। वह रचनात्मक है, सर्जक है। अुससे अन्नके अुत्पादनमें मदद मिलती है।

(अंग्रेजीसे)

लक्ष्मीनारायण साहू
सदस्य, भारत सेवक समाज

विनोबाकी तेलंगाना-यात्रा

७

पांचवां मुकाम

[ता० १९-४-'५१ : तंगळपल्ली : १० मील]

गंगोत्री अपने वेगमें

पोचमपल्लीसे बिदा लेते समय ट्रस्टीगणोंमें से चार और दूसरे हरिजन भाअी भी अुपस्थित थे। सहकारी तरीकेसे काश्त करनेके सम्बन्धकी जिम्मेदारीका अुन्हें भान कराकर विनोबाजी अगले मुकाम — तंगळपल्लीके लिअे रवाना हुअे। गांवके लोग अेक मील तक भजन गाते हुअे पहुंचाने आये। आखिर विनोबाजीने अुन्हें रोका। अुनकी तरफ मुड़कर अुन्होंने दोनों हाथ जोड़कर तेलगूमें कहा: "अंदरिकी नमस्कारम्!" यानी 'सबको नमस्कार।' लोगोंने भी भक्तिभावपूर्वक प्रणाम किया। हम लोग आगे बढ़े। भीमनपल्ली, धोतीगुड़ा, धर्माजीगुड़ा होते हुअे आठ बजे तंगळपल्ली पहुंच गये। पहले रोज पोचमपल्लीमें अिर्दगिर्दके देहातोंसे काफी लोग आये थे। भूदानकी बात चारों ओर फैल चुकी थी। विनोबाजी तंगळपल्ली जा रहे हैं, यह भी लोगोंको मालूम हो चुका था। अिसलिअे सिर्फ बीचमें आनेवाले गांवोंमें ही नहीं, बल्कि खेतोंमें, जंगलोंमें और बीचमें पड़नेवाले अेक ताड़-बनमें भी, जगह-जगह कहीं पचास, कहीं पचीस, कहीं सौ और कहीं दो सौ किसान कंधे पर कंबल धारण किये घुटने तककी धोती और हाथमें लकड़ी लिये हुअे विनोबाजीका स्वागत करने व अुन्हें दिलभर देखनेके लिअे खड़े थे। विनोबाजी दुखियोंसे मिलनेके लिअे आनेवाले हैं, अैसी खबर तो गांववालोंको पहलेसे ही थी। पर कोअी भगवान्का भक्त, गांधीका बेटा, जमीन दिलाने आया है, यह बात कलकी घटनासे चिनगारीकी तरह फैल गअी थी; और यही वजह थी कि लोग जगह-जगह अिस दानी फकीरको देखनेके लिअे जमा हुअे थे।

राज-रहित जमानेमें

रास्तेमें बहुत बड़ा ताड़-बन लगा था। अुसके सम्बन्धमें लोगोंने बताया कि पुलिस-अेक्शनके पहले यह बन अितना घना था कि

www.vinoba.in

रास्ता भी नहीं सूझता था। अुसकी तुलनामें आज बन आधा भी नहीं रहा था। पुलिस-अेक्शनके बाद कुछ दिनों तक जो राज-रहित जमाना बीता, अुस अवधिमें जिस जिससे बन पड़ा, सबने ताड़-वृक्ष काट लिये, किसीने मकानोंके लिअे, तो किसीने बेचकर पैसा कमानेके लिअे।

तंगळपल्ली पहुंचने पर मालूम हुआ कि गांवमें दो पक्ष हैं। दो सगे भाअी आपसमें लड़ रहे हैं — कोर्ट-कचहरियोंमें हजारों रुपये बरबाद कर चुके हैं। अिन्हीं दोनोंके कारण गांवमें भी दो पक्ष बन गये हैं। विनोबाने दोनोंको अपने पास बुलाया। अेक — वेंकट रेड्डी — के यहां तो हम ठहरे ही थे, दूसरे नरसिंह रेड्डी। वेंकट रेड्डी कम्युनिस्टोंके भयसे अकसर हैदराबाद रहते। हमारे आनेकी खबर पाकर वे अेक ही रोज पहले घर आये थे। अुनकी पत्नी तो हमारे पहुंचनेके बाद आअीं। दूसरा भाअी पड़ोसमें ही रहता था। झगड़ा आपसी था, फिर भी अेक भाअी कम्युनिस्टोंका मददगार समझा जाता था, तो दूसरा कांग्रेस और सरकारका।

भीम-जरासंधकी जोड़ी राम-लक्ष्मणके पथ पर

गांववालोंने विनोबासे साफ-साफ कह दिया: 'ये दोनों भाअी लड़ते हैं, गांव तबाह हो रहा है। दोनोंकी लड़ाअीमें गांववाले पिसे जा रहे हैं।

विनोबाने अपने तरीकेसे सबके सामने दोनोंसे बात की। पूछा — "तुम दोनों और कितने बरस जीनेवाले हो?"

"हमारा अेक पांव स्मशानमें है और अेक यहां," — अेकने जवाब दिया। दूसरेने भी अपनी अनुमति अिसी वक्तव्यके पक्षमें प्रगट की।

"फिर यह लड़ाअी और तबाही किस लिअे?"

"आप जैसी आज्ञा दें।"

"पंच जो फैसला दें अुसे मंजूर कर लेंगे न?"

"जरूर कर लेंगे।"

लोगोंके दिलोंसे मानो अेक बड़ा भारी बोझ अुतर गया।

लेकिन विनोबाका काम अितनेसे पूरा नहीं होता था। शामको प्रार्थना-प्रवचनमें दोनोंको मंच पर बुलाया। जनतासे कहा: 'ये दोनों भाअी अब तक भीम-जरासंध थे। अब आजसे अिनके झगड़े मिट गये हैं।' दोनोंने विनोबाको प्रणाम किया। दोनों मंच पर अेक-दूसरेसे गले मिले। नब्बे अेकड़ जमीनका दान घोषित किया और आअिन्दा चलकर गांवकी सेवा करनेका दोनोंने अभिवचन दिया। जो भाअी गांव छोड़कर हैदराबाद रहते थे, अुन्हें विनोबाने कहा कि तुम्हें अब हैदराबाद रहनेकी जरूरत नहीं है। और गांववालोंको समझाया: "आपके गांवका कोअी मनुष्य आपके डरसे किसी दूसरे गांव चला जाता है, तो यह आपके लिअे असह्य होना चाहिये। 'हम सब जीयेंगे तो अेक साथ, मरेंगे तो अेक साथ,' अैसी गांववालोंकी भूमिका होनी चाहिये।" अन्तमें सबको निर्भय रहने और शराब-सेंदीसे मुक्ति पानेके लिअे कहा। सारा भाषण सर्वोदयके जून '५१ के अंकमें पाठक पढ़ सकते हैं। अुस भाषण द्वारा विनोबाने अपनी अनेकविध दलीलोंसे लोगोंके दिलों पर यह बात अंकित कर दी कि हिन्दुस्तानके लिअे अहिंसाके सिवा दूसरा कोअी रास्ता नहीं है।

लोग अपने-अपने घर ये बातें करते हुअे गये कि नब्बे अेकड़ जमीन यानी नब्बे आदमियोंके लिअे जीवन निर्वाहका साधन! यही अेक चर्चा गांवमें चल रही थी। कल सौ अेकड़ भूमिदान हुआ था। आज भी नब्बे अेकड़ हो गया। कम्युनिस्टोंने तो सिर्फ वादे किये थे, किन्तु विनोबा तो जमीन दिलवा रहे थे। भूदान चल पड़ा।

पचीस बरसके बादका मंगल दिन

शामको भोजनके समय दिनभरकी सद्भावनाओं और सद्-प्रयत्नों पर मानो कलश चढ़ गया। दोनों भाअी और दोनोंके दो भतीजे (तीसरे भाअीके पुत्र) अनेक बरसों बाद, शायद पचीस बरसके बाद, हम सबके साथ अेकत्र भोजनके लिअे बैठे। बड़े भाअीकी पत्नीने सबको परोसा। नरसिंह रेड्डी तो अितने प्रभावित हुअे कि अुन्होंने विनोबाका सारा साहित्य खरीद लिया और दूसरे रोज अुन्होंने हमारे साथ चलनेकी अिजाजत भी मांगी। विनोबाने खुशीसे चलनेकी अनुमति दे दी।

हक़ीमने मर्ज चीन्हा

भीम-जरासंधके रूपमें तेलंगानाके प्रश्नका आज अेक और पहलू प्रकट हुआ और वह भी बहुत अहम पहलू। अब हक़ीमने मर्जको ठीक-ठीक चीन्हा था। अिलाज भी, जो परिस्थितिमें से ही सूझा था, लागू होता नजर आ रहा था। आज गांवमें भय और हिंसाके स्थान पर कौटुंबिक भावना और पारस्परिक प्रेमका बीज बोया गया। गांवकी हवा बदल गअी।

दा० मूं०

अुर्दूका वतन

ता० ६-१०-'५१ के 'हरिजनसेवक' में मैंने "अुत्तरप्रदेशकी सरकारी भाषा" के विषयमें जो लिखा, अुसके बारेमें कुछ शिकायतके पत्र मुझे मिले हैं। अेक भाअी कहते हैं कि अुर्दूका वतन अुत्तर प्रदेशको बताना गलत है। लेकिन अेक दूसरे भाअी यह लिखकर मुझे विश्वास दिलाते हैं कि अुर्दूका वतन अुत्तरप्रदेश ही है। परन्तु अुनकी शिकायत यह है कि अुर्दू पढ़नेवाले वहां कम हैं; जो हैं वे अधिकतर मुसलमान हैं। अुनकी यह भी राय है कि "बिना देखे लिखनेसे मुसलमानोंमें जो लोग साम्प्रदायिक खयालके हैं, वे होहल्ला मचावेंगे कि देखिये, 'हरिजनसेवक' कैसा अुचित कहता है?"

यह पढ़कर मुझे विश्वास हुआ कि मैंने जो लिखा, अुसमें कोअी खास गलती नहीं थी। अुर्दूका जनम कैसे और कहां हुआ, यह अलग सवाल है। आज अुसका घर अुत्तर भारत है, अिसमें सन्देह नहीं। पंजाबसे लेकर पटना तक, कहीं कम और कहीं ज्यादा, कअी लोग जाति या धर्मके भेदभावके बिना अुर्दू पढ़ते और लिखते हैं। वे काफी तादादमें हैं, अिसमें शक नहीं। अैसे प्रदेशमें सरकारी भाषा हिन्दी-नागरीके साथ अुर्दू भी रहे, यह स्वाभाविक माना जाना चाहिये। परन्तु अैसा देखनेमें नहीं आता, यह बड़ी सोचनेके काबिल बात है। अिसीमें मजहबी कौमवादकी बू दिखाअी देती है। और यहां पर यह सवाल नहीं है कि मुसलमान क्या कहेंगे। सवाल सही बातका पता लगाकर अुस पर अमल करनेका है। यहां पर अेक बातकी स्पष्टता कर देना ठीक होगा। भारतकी राजभाषाके लिअे लिपि नागरी होगी, यह तय हो चुका है। अुसके लिअे यह संशोधन नहीं है। मेरा सूचन अुत्तरप्रदेशकी सरकारी भाषाके लिअे है। और यह भी नहीं है कि हरअेक अुत्तरप्रदेशवासी दोनों शैलियां और दोनों लिपियां मजबूरन सीखे। मेरी सूचना अितनी ही थी और है कि अुत्तरप्रदेशकी सरकार हिन्दीके साथ अुर्दूको भी मान्यता दे। और खास चीज तो यह कि हिन्दी और अुर्दूकी अैसी आसान शैलियोंका विकास अुसकी नीतिके फलरूप हो कि आज जो दो रूपोंमें अेक ही मूल भाषा दिखाअी देती है, वह फिरसे अेकसी बने और अुसमें कोअी मजहबी खयाल न रहे। अैसा होगा तो यथासमय दोको छोड़कर अेक ही लिपिसे काम लेनेका सुधार अपने आप हो जायगा।

अहमदाबाद, ३-११-'५१

भगनभाअी देसाअी

www.vinoba.in

अितना आसान नहीं है

'हरिजन' में अभी हालमें "लेकिन किसान और मजदूर कहां हैं?"* नामसे मेरा जो लेख छपा है, अुसके फलस्वरूप अेक राजनीतिक पार्टीने मुझसे पूछा है कि क्या मैं आगामी चुनावोंमें अुसकी तरफसे अेक सीटके लिअे अुम्मीदवार बनकर चुनाव लड़ूंगी। बेशक, अिससे अुसे अेक अैसा प्रतिनिधि मिल जायगा, जो झोंपड़ीमें रहता है और गाय दुहना जानता है। लेकिन यह काम अुन कामों जितना आसान नहीं है। मैं जन्मजात किसान नहीं हूं, मैंने स्वेच्छासे किसानका जीवन अपनाया है। और मेरे जैसे व्यक्तिके लिअे धारासभाका सदस्य या मंत्री बनना बहुत कठिन नहीं है, क्योंकि मेरे पास अितनी बौद्धिक तालीम है। लेकिन हमें तो अिससे भी कहीं ज्यादा क्रान्तिकारी चीज कर दिखाना है। हमें परम्परागत किसानोंको मंत्री बनाना होगा, जिन्होंने असंख्य पीढ़ियोंसे जमीन पर मेहनत-मशक्कत की है और अुसीके सहारे अपना जीवन-निर्वाह किया है। जैसा कि बापू कहते हैं, अिन किसानोंको सुशिक्षित होनेकी जरूरत नहीं, बशर्ते "अुनमें स्वस्थ विवेक हो, वे बहादुर हों, अुनकी प्रामाणिकताके बारेमें किसीको अुंगली अुठानेका मौका न मिले और अुनकी देशभक्तिमें शंकाकी गुंजाअिश न हो।" अैसे चरित्रवाले लोग किसानोंमें से हमें ढूंढ़ने होंगे — खास करके दूर-दूरके गांवोंमें; और ये ही वे युगों पुराने अनुभव और समझवाले सच्चे लोग हैं, जिनके मातहत हमें अपने आपको रख देना होगा। हमें अपने बौद्धिक अभिमानको नम्र बनाना होगा और दुनियाके बोझको अुठानेवाली सहनशक्ति और ज्ञानके सामने अपने सिर झुकाने होंगे। जब मैं धूपसे झुलसे हुअे और ऋतुओंकी मार खाये हुअे किसी किसानको खेतोंमें काम करते देखती हूं, तब मैं अपने सामने अुस शक्तिका प्रत्यक्ष दर्शन करती हूं, जो मनुष्य-जातिका अेकमात्र सहारा है। अगर खेतोंमें हमेशा काम करनेवाला, हमेशा फसलोंकी निगरानी रखनेवाला, योजना बनानेवाला और प्रार्थना करनेवाला किसान न होता, तो हम सब कहींके न रह जाते। अिसलिअे यह सर्वथा अुचित है — खासकर भारतमें जहां प्रजाका बहुत बड़ा भाग गांवोंमें रहता है, कि किसान राष्ट्रका मार्गदर्शन करे और बुद्धिमान लोग अुसकी सेवा और सहायता करें।

बेशक, अिन किसानोंके चुनावमें काफी सावधानी और बुद्धिमानीसे काम लेना होगा, क्योंकि सभी किसान फरिश्ते नहीं हैं। चालाक और युक्ति-प्रयुक्तिसे काम लेनेवालोंसे बचना होगा। अिनमें से जो लोग मजदूरों द्वारा खेती कराते हैं और छोटे जमींदारोंकी तरह बरताव करते हैं, अुनसे दूर रहना होगा। 'राजनीतिक मनोवृत्ति' रखनेवालोंसे तो निश्चित रूपसे बचना होगा। जिन किसानोंमें बापूके बताये हुअे गुण हों, अुन्हींको चुनना चाहिये। और अैसे लोग अकसर अुन्हीं किसानोंमें से मिलेंगे, जो अेक जोड़ी बैलोंके सहारे खेती करते हैं और अपने सारे परिवारके साथ खुद खेतोंमें काम करते हैं। अुन्हें यह नहीं सोचना चाहिये कि सफेदपोश भद्रपुरुषोंकी जातिमें बदलनेके लिअे अुन्हें चुना जा रहा है, बल्कि यह सोचना चाहिये कि भद्रपुरुषोंको किसानोंमें बदलनेके लिअे अुन्हें चुना जा रहा है।

अेक बार फिर मैं देशकी राजनीतिक पार्टियोंसे अपील करती हूं कि अब वह समय आ गया है, जब अुन्हें मौजूदा असफल और सड़े-भुसे तरीकोंको छोड़ देना चाहिये और बापू द्वारा बताया हुआ साहसभरा कदम अुठाना चाहिये। अिसमें कोअी शक नहीं कि कांग्रेसको बहुत पहले ही यह कर डालना चाहिये था। बापूके मार्गदर्शनमें, जिसने कांग्रेसको अितनी महान विजय दिलाअी, भारतकी आजादीके लिअे बरसों तक लड़नेके बाद अुसे स्वभावतः यही कदम अुठाना चाहिये था। लेकिन जब कांग्रेसके हाथमें पूरी सत्ता आअी, तब वह सोचने लगी कि वह अपने गुरुसे ज्यादा जानती है। और अिसके जो घातक नतीजे आये, अुन्हें हम सब प्रत्यक्ष देख रहे हैं!

गोपाल आश्रम, मीरा
टेहरी-गढ़वाल, २१-१०-'५१
(अंग्रेजीसे)

* यह लेख 'हरिजनसेवक' के ता० ६-१०-'५१ के अंकमें छपा है।

टिप्पणियां

न्यायमूर्ति कणिया

भारतके अुच्चतम न्यायालयके मुख्य न्यायाधीश श्री हरिलालजी कणियाकी मृत्युसे हमारे देशका अेक प्रतिभाशाली कानूनज्ञ अुठ गया। स्वतंत्रता न आयी होती, तो अिसमें सन्देह है कि वे अिस वरिष्ठ पद पर पहुंचते या नहीं। भारतमें प्रतिभाशाली व्यक्ति हमेशा होते रहे हैं, लेकिन स्वतंत्रताके अभावमें वह अपनी ही सन्तानकी योग्यताका पूरा लाभ लेनेसे वंचित रहता आया है। मैं श्रीमती कणिया और अुनके परिवारके प्रति हार्दिक दुःख और सहानुभूति प्रगट करता हूं।

वर्धा, ७-११-'५१ कि० घ० म०
(अंग्रेजीसे)

'गांधी-घर' योजना शिविर

गांधी स्मारक निधिकी ओरसे देशके अलग-अलग केन्द्रोंमें 'गांधी-घर' योजना शुरू करनेका तय किया गया है। कार्यकर्ता लोग काम पर लग जायं, अिसके पहले अुनका अेक शिविर स्वराज्य आश्रम, वेड़छीमें चलाकर नये कामका स्वरूप निश्चित किया जाय, अैसा सोचा गया है।

अिस शिविरकी अवधि तीन मासकी ठहराअी गअी है, और अुसका प्रारंभ १७ दिसम्बरसे होगा। शिविरके दिनोंमें वेड़छी और स्यादला अिन दो गांवोंका सर्वोदयकी दृष्टिसे सर्वांगी नियोजन करनेका सोचा गया है।

जुगतराम दवे

महादेवभाअीकी डायरी
[तीसरा भाग]
संपा० नरहरि परीख
अनु० रामनारायण चौधरी
कीमत ६–०–० डाकखर्च १–१–०

बापूके पत्र मीराके नाम
अनु० रामनारायण चौधरी
कीमत ४–०–० डाकखर्च ०–१३–०
नवजीवन कार्यालय, अहमदाबाद–९

विषय-सूची

		पृष्ठ
विनोबाका ललितपुरका भाषण	दा० मूं०	३२९
विनोबाकी अुत्तर भारतकी यात्रा – ५	दा० मूं०	३३०
जमीन और जनसंख्या	कि० घ० मशरूवाला	३३२
अुड़ीसामें शराबबंदी	लक्ष्मीनारायण साहू	३३३
विनोबाकी तेलंगाना – यात्रा : ७	दा० मूं०	३३४
बुर्दूका वतन	मगनभाअी देसाअी	३३५
अितना आसान नहीं है	मीरा	३३६
टिप्पणियां :		
न्यायमूर्ति कणिया	कि० घ० म०	३३६
'गांधी-घर' योजना शिविर	जुगतराम दवे	३३६

www.vinoba.in